शोध सारांश

शोध का विषय" आदिवासी महिलाओं में रजोनिवृत्ति की चुनौतियाँ एवं समाज कार्य हस्तक्षेप की संभावनाएं (कोथलकुंड पंचायत का क्षेत्रीय अध्ययन)" है जिसके अंतर्गत आदिवासी महिलाओं में रजोनिवृत्ति संबंधी शारीरिक,मानसिक एवं मनोसामाजिक समस्याओं का अध्ययन करना है| इस शोध में आदिवासी महिलाओं में रजोनिवृत्ति के आने से उनको शारीरिक एवं मानसिक समस्याएं किस तरह उनके जीवन को प्रभावित करती है | रजोनिवृत्ति के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना है। किस तरह बढती उम्र के साथ आने वाली समस्याएं और साथ ही रजोनिवृत्ति संबंधी समस्याओं का आदिवासी महिलाओं के जीवन को प्रभावित करते है।

रजोनिवृत्ति का आदिवासी महिलाओं के जीवन और समाज में पड़ रहे प्रभावों को जानना भी इस शोध का मुख्य लक्ष्य है। औरत के नजरिए से समाज एक अलग ही रूप में नजर आता है वह वैसा रचनात्मक और स्वस्थ नहीं होता जिस तरह यह पुरुषों के लिए होता है यहाँ महिलाओं के लिए गरीबी शायद एक बोझ नहीं है परंतु हर माह , माहवारी के दौर से गुजरना और उनके गुप्तांगों से होने वाले श्वेत द्रव के बहाव के बोझ से वे दोहरी होती जाती है महिलाओं के शरीर में घटाने वाली शारीरिक घटनाओं को इतने अलग – अलग रूपो में परिभाषित किया गया है कि उन पर अब खुलकर चर्चा करना भी बुरा माना जाता है यह चर्चा चरित्र के हनन से जुड़ जाती है यू तो चिकित्सक इसे सामान्य शारीरिक प्रक्रिया मानते हैं और जानकार कहते हैं कि जिस तरह पौधों से नियमित रूप से फलों की उत्पत्ति होती है वैसे ही श्वेत स्त्राव या माहवारी एक औरत के प्रजनन शक्ति का प्रमाण होता है । सामाजिक स्तर पे इसे खुलकर स्वीकार नहीं किया जाता है सफ़ेद पानी के बहाव की शुरुआत से किशोरी के मन को जीवन भर का बोझ ही मिलता है । वह तनाव में होती है उसे लगता है, उसने कुछ गलत काम या व्यवहार किया है जिससे उसके जननांगों में से इस तरह का पानी बह रहा है । क्योंकि उसे इस बारे में कोई जानकारी नहीं रहती है क्योंकि आज भी हमको हमारे परिवार में इस बारे में बताया जाता है और ना ही स्कूल में परिवार की सयानी महिलाएं । यहाँ तक की उसकी माँ भी उसको तकनीकी रूप से समझाने के बजाय अपनी बेटी पर बन्दिशें लगाना शुरू कर देती है और वह यह मानने लगती है कि अगर मेरी बेटी का किसी पुरुष

से संपर्क हुआ तो वह गर्भवती हो जाएगी। लेकिन वह भी नहीं सोचती कि इन सब का उस पर क्या असर पड़ रहा है पर वह माँ भी क्या करे उसके साथ भी तो यही हुआ है जो वह अपनी बेटी के साथ कर रही है और इस तरह से उसके अंदर तनाव पनपने लगता है इस तरह से आपसी संबंधों में एक असुरक्षा आ जाती है।इस तरह बेटी के प्रति सहज ही अविश्वास कि भावना पनपने लगती है। गाँव कि दाइयाँ बताती है कि माहवारी या सफेद पानी के बहाव के बारे में कोई चर्चा नहीं करता है इसका पता तो घर के आँगनों में सूख रहे कपड़ों पर लगे दागों से ही चलता है। सामान्यत: मासिक धर्म के दौरान पहने गए कपड़ों को ऐसे अंधेरे स्थान पर सुखाया जाता है जहां परिवार या रिश्तेदारों का आना जाना नहीं होता है। ऐसे कपड़ों के धूप में न सूखने या सही ढंग से साफ न होने के कारण संक्रमण का खतरा बढ़ जाता है और शरीर की एक सामान्य प्रक्रिया औरत के स्वास्थ्य के लिए अभिशाप बन जाती है। महाराष्ट्र के गढ़चिरोली जिले में महिलाओं के मुद्दों पर कार्य कर रही सर्च संस्था के निष्कर्ष बताते हैं कि 92 फीसदी महिलायेँ किसी न किसी प्रजनन अथवा यौन संबंधी संक्रमण की शिकार है सामुदायिक व्यवहार के अध्ययनों से पता चलता है कि कपड़ों पर नजर आने वाले दागों के साथ-साथ इसे महिलाओं की शारीरिक कमजोरी के साथ भी जोड़कर देखा जाता है। इस श्वेत प्रवाह से शरीर के अपशिष्ट पदार्थ ही महिलाओं के शरीर के साथ बाहर आ जाते हैं किन्तु सामाजिक स्तरों पर इसे स्त्री की शक्ति और ताकत के बह जाने के रूप में परिभाषित किया जाता है साथ ही यह माना जाता है कि महिलाओं के शरीर में यौन संबंधी अपेक्षाएँ पुरुषों से ज्यादा होती है और इसी गर्मी के कारण श्वेत स्त्राव होता है जिसे फिर नियंत्रित करने के लिए गर्मी पैदा करने वाले खाने के उपयोग पर प्रतिबंध लगा दिया जाता है। तब महिलाओं को दूध, अंडे क्रीम या गुड़ से बने पदार्थ खानों को नहीं मिलते हैं, इस तमाम विसंगतिपूर्ण व्यवहारों का परिणाम यह होता है।

शोध प्रश्न

- क्या आदिवासी महिलाओं में रजोनिवृत्ति की वजह से मनोसामाजिक समस्याओं का निर्माण होता है एवं यह समस्या किन-किन चरों से प्रभावित है?

- रजोनिवृत्ति से समायोजित होने के लिए आदिवासी महिलाएँ क्या –क्या करती है ?

उद्देश्य (Objective)

- उत्तरदाताओं की सामाजिक, आर्थिक स्थिति का अध्ययन करना।
- उत्तरदाताओं में निर्माण हो रही मनोसामाजिक समस्याओं एवं उनको प्रभावित करने वाले चरों का अध्ययन करना।
- उत्तरदाताओं में रजोनिवृत्ति से समायोजित होने के लिए किए गए प्रयासों का अध्ययन करना।
- समाजकार्य हस्तक्षेप सुझाना।

परिकल्पना

- उत्तरदाताओं की उम्र एवं उनको आने वाली कुल मनोसामाजिक समस्या संबंधित है।

प्रस्तुत शोध आदिवासी महिलाओं में रजोनिवृत्ति की चुनौतियाँ विस्तृत वर्णन किया गया हैं, इसलिए यह शोध मुख्यतःवर्णात्मक अभिकल्प में आता हैं। प्रस्तुत शोध सर्वेक्षण पद्धति पर निर्भर हैं, आदिवासी महिलाओं में रजोनिवृत्ति की चुनौतियाँ को गहराई से जानने के लिए सरंचित साक्षात्कार अनुसूची का उपयोग किया गया हैं,प्रत्यक्ष साक्षात्कार द्वारा तथ्यों का संकलन किया गया है।जिसके सभी प्राप्त आकड़े संख्यात्मक रूप में हैं। प्रस्तुत शोध में संख्यात्मक पहुलओं को रखा गया है इसलिए यह शोध मुख्य रूप से मात्रात्मक आता हैं। अध्ययन के दौरान प्राप्त तथ्यों का विश्लेषण किया गया है।इस प्रक्रिया से प्रमुख समस्या के कारणों और उसके समाधान के लिए क्षेत्र विशेष में उपलब्ध जानकारी प्राप्त होती है, इन्हीं जानकारी को ध्यान में रखते हुए आदिवासी महिलाओं में रजोनिवृत्ति की चुनौतियाँ संबंधीसमाज कार्य हस्तक्षेप सुझाया गया है।अंत: यह शोध अंशत: निदानात्मक अभिकल्प के अंतर्गत आता है। यह शोध मध्यप्रदेश के बैतुल जिले के कोथलकुंड पंचायत के तहत आने वाले गांवों की आदिवासी महिलाएँ

जिनकी उम्र 45 से 55 के बीच है एवं उनकी रजोनिवृत्ति (menopause) आयी है। यह सभी महिलाएं प्रस्तुत शोध की समग्र बनी है। शोध का समग्र अज्ञात होने के कारण असंभावित निदर्शन पद्धति के अंतर्गतउद्देश्यपूर्ण निदर्शन(purposive sampling) किया गया है। प्रस्तुत शोध कार्य में प्राथमिक स्त्रोत द्वारा तथ्यों का संकलन करने के लिए संरचित साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया है। द्वितीय स्रोत के लिए लाइब्रेरी मेथड्स का प्रयोग किया गया है। तथ्यों का विश्लेषण करने हेतु तथ्यों के स्वरूप सम्बंधित संगणक अनुप्रयोगो का उपयोग किया गया है।आंकड़ों को विश्लेषण करने के लिए SPSS टूल का प्रयोग किया गया है।

इस शोध के द्वारा यह भी पता चला है कि आदिवासी महिलाओं में रजोनिवृत्ति और उसके मनोसामाजिक समस्याओं के प्रति उनमें उदासिनता पायी जाती है। आदिवासी महिलाएं रजोनिवृत्ति को एक समस्या मानना ही नहीं चाहती। यह उनके व्यस्त जीवन में आने वाला एक ऐसा पहलू है जो उन्हें एक बार अवश्य ही झेलना है। कई आदिवासी महिलाएं रजोनिवृत्ति के लिए जड़ी-बूटी का भी इस्तेमाल करती है क्योंकि उन्हें लगता है कि यह एक न एक दिन तो यह होना ही है तो जल्दी हो जाए। आदिवासी महिलाओं में रजोनिवृत्ति के समय जो मनोसामाजिक समस्याएँ आती भी है, उसे भी वह एक पीड़ादायक दौर समझ कर भुला देती है। इसका जो भी असर होता है वह सिर्फ उनके पति और परिवार वालों को ही पता चल पाता है।

आदिवासी महिलाओं में रजोनिवृत्ति के संदर्भ में और भी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है जिसे दूर करने की भी आवश्यकता है। आज प्रत्येक आदिवासी महिलाएं अपने जीवन काल में इस समस्या से एक बार अवश्य टकराती है और प्रत्येक महिला को समान रूप से उन्हीं समस्याओं और चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। कई बार चिड़चिड़ापन, गुस्सा और ईर्ष्या का भी सामना इनको करना पड़ता है। जिसे ये आदिवासी महिलाएं न तो आसानी से अन्य लोगों के सामने प्रकट कर सकती है और न ही अपने परिवार वालों के सामने ही। इस समस्या के कारण इनके यौनिकता में भी परिवर्तन आता है परंतु इसके संदर्भ में भी इन्हें अपने मानसिक समस्या का समाधान स्वयं ही करना पड़ता है।

आदिवासी महिलाओं का रजोनिवृत्ति के प्रति उदासीन भावना का प्रमुख कारण यह है कि न तो कोई सरकार और न ही कोई संस्था इस संदर्भ में कोई कार्य कर रही है जिससे वे अपनी समस्याओं को प्रदर्शित और उपचार करा

सके। रजोनिवृत्ति जैसे महत्त्वपूर्ण समस्या को न ही सरकारी संस्थाओं, स्वास्थ्य संस्थाओं ने नकारा है बल्कि गैर-सरकारी संस्थाओं ने भी इस पर बहुत कम कार्य किए है। खास कर आदिवासी महिलाओं के संदर्भ में तो कोई कार्य ही नहीं हुआ है। अतः इन चुनौतियों के समायोजन के लिए एक परिष्कृत समाजकार्य हस्तक्षेप की आवश्यकता है, जो इसका समाधान प्रस्तुत कर सके। साथ ही सरकारी और गैर-सरकारी संस्थाओं को एक साथ इस समस्या के समाधान के लिए आगे आने की जरूरत है।